

रुहा नी शुद्ध सतसंग

‘श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी’

जो न भजते नारायणा ।
तिन का मै न करउं दर्शना ।

‘जीवत मरिए’
भवजल तरिए

तपः तपो

तथास्तु

‘जिन प्रेम कीओ’
तिन ही प्रभु पाइयो

ॐ

सतनाम गुरु प्रसादि

तेरे भापे सरवत दा भला

कृपया अमल कर व्यवहारिक बने । ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ा जा सके ।

“कीमती चवन्नी विशेष”

“खेत शरीर जो बीजिए सो अन्त खलोइया आई ।”

प्रभु प्रेरणा इस वचन में स्पष्ट ही है कि मानव जन्म में सूक्ष्म से भी सूक्ष्म रूप से तू कुछ भी बीजेगा, उसका भुगतान अवश्य आवश्यक रूप से तुझे भुगतने पर विवश होना ही पड़ेगा

निश्चित रूप से ऐसा तू यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । ये बीज बीजने के तीन ही ढंग हैं मन-वचन-तथा शरीर से । ऐसा तू निश्चित रूप से जान ले कि यदि तू मानसिक रूप से भी किसी दूसरी आत्मा का हित अथवा अहित विचार करता है तो इसका भुगतान भी अवश्य, जो पहले से ही निश्चित है तेरे हिसाब में कोई बड़ी सावधानी से जोड़ता जाता है । इस से बचने के लिये ही तुझे मानसिक रूप से केवल “अकाल पुरुष परमात्मा” का ही “चिन्तन” निरन्तर करने की ताकीद की जाती है । इसीलिये प्रभु प्रेरणा है कि “इक पल साचा वीसरे सा वेला बिरथा जाई । स्वास-स्वास संभालिये आपे बरूखा करे रजाई ।” प्राण निरन्तर चलता है वो कभी नहीं रुकता । जब रुकता है तो केवल “काडो-2” की रट लग जाती है केवल, सभी की जुबान पर केवल इसी दुर्लभ उपलब्धि के लिये जिसे तू सारी उम्र सजाता संवारता आया । केवल इसी दुर्लभ उपलब्धि के लिये सभी चूमते चाटते रहे । अब कुछ समय के लिये भी घर में रखने को राजी अथवा तैयार ही नहीं होते किसी भी सूरत में । यही तू कुछ अधिक बड़ा हो जाये और दरवाजा थोड़ा छोटा पड़ जाये, तो तुझे ही काटने का निश्चित उपाय बताया जाता है, इस इकट्टी हुई “दुर्लभ समिति” का यही केवल उत्कृष्ट न्याय प्रत्यक्ष किया जाता है । ताज्जुब है कि आँख तो केवल तेरी ही बंद होती है, पर ये सब भी इतनी जल्दी कैसे तेरे द्वारा उनके प्रति किये गये समस्त उपकारों को ही आँख पर पट्टी

बाँध कर के भूलने का ये दुर्लभ उपकार, तेरे लाख न चाहने पर भी तेरे ऊपर ये दुर्लभ बोझा लाद ही देते हैं, शायद तभी तेरा भार निरन्तर बढ़ता ही जाता है । ये गुप्त दुर्लभ सप्लाई शायद रास्ते में भी उपलब्ध होती ही रहती है । इसीलिये तेरा भार चार से उठना सम्भव नहीं होता । इतनी बड़ी सप्लाई को तू अकेला हज्म करने में कैसे सफल हो सकेगा ? भाई हम तो इसी चिन्ता में ही घुले जा रहे हैं निरन्तर । शायद इसे हज्म करने के लिये ही, अपने हाजमें को बढ़ाने के लिये ही तू सुबह-दोपहर-शाम बिना नागा, रोज तीनों वक्त **“नुस्खा विशेष”** अपने उदर की पाचन शक्ति बढ़ाने के वास्ते दूध के साथ रोजाना लेता ही रहता है । इस **“नुस्खे विशेष”** की बड़ी सी सप्लाई का आर्डर तू एडवांस में ही अभी से दे डाल । क्योंकि तेरे समस्त प्यारे-2 सम्बन्धियों तथा जानकारों को भी इस **“नुस्खे विशेष”** की आवश्यकता अवश्य पड़ेगी ही यकीनी तौर पर । इस मुश्किल की घड़ी में इसका इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध होना दुर्लभ ही है । हमें एक शंका है कि कहीं रोज तीनों वक्त बिना नागा निरन्तर जिन्दगी भर अभ्यास कर लेने के बावजूद भी यदि उल्टियां होने लगी-अथवा पेट में वट या बल पड़ने लग गये, तब तू इस नई उत्पन्न होने वाली बीमारी का क्या इलाज कर पायेगा ? तुझे तो ये रस्सी को दुगना करके खूब अच्छी तरह से कस कर फट्टे के साथ ही अच्छी तरह से चिपका कर के बाँध ही देंगे । इस वक्त तो तू हिलने में भी समर्थ हो ही नहीं

सकता फिर इस बीमारी का तेरे पास क्या इलाज होगा ? सावधानी के लिये तुझे सलाह देते हैं, कि साथ में एक मान्यता प्राप्त किसी विशेषज्ञ को साथ चलने के लिये अवश्य निश्चित कर ही लियो । “फीस विशेष” पहले से ही उस के नम्बरों वाले बैग में अग्रिम रूप में धर दियो । आज कल में विशेषज्ञ “मरीजों विशेष” पर भरोसा तनिक सा भी नहीं करते । क्योंकि इन्हें पहले ही काफी धोखे खाने पर मजबूर होना पड़ा है । जब जिन्दे ही धोखा दे जाते हैं तो भाई फिर मुर्दों का क्या भरोसा अथवा यकीन ही किया जा सकता है कभी सुपने में भी ? फिर यहाँ तो दिक्कत कुछ अधिक ही है अर्थात् यहाँ तो मुर्दा भी बंधा हुआ है रस्सी से जकड़ करके फट्टे के साथ । जैसे कि शक होवे कि कहीं ये उठ कर के हमें ही चिपक न जाये भूत बन कर के । और कहीं विशेषज्ञ भी इसी दुर्लभ महामारी की चपेट में आ करके रास्ते में ही उल्टियाँ करने लग गया, तेरे “दुर्लभ संग” के कारण तो फिर तो समझ ले कि तेरे समस्त उपाय प्यारे-2 सम्बन्धियों तथा जानकारों सहित इस “महामारी” के पेट में ही आखिरी दम तोड़ने के लिये निश्चित रूप से अवश्य मजबूर हो ही जायेंगे । ऐसा तू फट्टे पर लेटने से पहले एडवांस में ही जान ले, पल्लू में गाँठ बाँध करके निश्चित रूप से यकीनी तौर पर यही होने वाला है !

“जैसा बीजे सो लूणे करम एह खेत ।”

ये समस्त दुर्लभ सप्लाई तुझे अवश्य आवश्यक रूप से शमशान पहुँचने से पहले ही तुझ तक पहुँचा ही दी जायेगी, भाई इसकी तो हम भी तेरे सिर पर हाथ रख करके गारन्टी देते ही हैं । भाई तू अभी सोच ले खूब अच्छी तरह से । बाद में ये दुर्लभ सप्लाई जो केवल “विशेष आर्डर” पर ही तैयार करवाई जाती है “ग्राहक विशेष” के ही केवल निजी प्रयोग के वास्ते-को बदलने में कोई भी समर्थ नहीं हो सकता-कभी भी किसी भी काल में सुपने में भी-इस में सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से भी संशोधन केवल असंभव नाम के दुर्लभ लफज से अपने मुँह को चिढ़वाना ही साबित होगा । सप्लाई होने वाले साधन में क्वालिटी पर पूरा ध्यान दिया जाता है भाई इस में शक की कोई गुंजाइश सुपने में भी दुर्लभ ही है । इन्सानी जिन्दगी केवल एक खेत की तरह से ही है जिसमें कि तीन हिस्से फसल से भरे हुए हैं, जो कभी पहले समय में आत्मा ने केवल मनुष्य जन्म में ही तीनों उपलब्ध तरीकों से ही केवल बुआई की थी । उसका कुछ इलाज नहीं है सुपने में भी, वो तेरे को अवश्य खानी ही पड़ेगी निश्चित रूप से । केवल एक चौथाई हिस्सा अर्थात् “एक चवन्नी” ही केवल तुझे मिली है नई फसल बीजने के वास्ते । इसकी तुझे पूरी छूट है कि इसे तू कैसे-कब और कहाँ, किस ढंग से बीजना अथवा खर्च करना पसंद करता है । ये भी केवल बीजने अथवा खर्च कर देने के बाद अगले जन्मों में पहले वाले बीजे हुए तीन हिस्सों अथवा बारह

आनों में ही केवल बदल दी जायेगी । ऐसा तू निश्चित रूप से जान ले । आज का पुरुषार्थ अथवा चवन्नी तेरा अगले जन्मों का होने वाला ^{६६}केवल दुर्लभ आवश्यक भाग्य विशेष^{७७} ही है निश्चित रूप से । तेरी अपनी ही परिभाषा है कि भाग्य कभी भी नहीं बदलता सुपने में भी करोड़ यन्न विशेष-2 दुर्लभ-2 कर लेने के बावजूद भी भाग्य केवल निश्चित विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । अब तू स्वयं ही विचार ले कि इस का विशेष निश्चित जिम्मेदार कौन है सिवाय ^{६६}तेरे^{७७} लेकिन अपनी भूल में तू इस चवन्नी को इस मूर्खता से ऐसी निकृष्ट वासनाओं विशेषों पर खर्च कर रहा है कि जिसके बदले में तुझे अनन्त काल तक तड़पा देने वाले घोर भयानक-2 दुख विशेष सहने के लिये अवश्य मजबूर विशेष होना ही पड़ेगा-अवश्य आवश्यक रूप से नियमानुसार । ^{६६}प्रभु^{७७} प्रेरणा स्पष्ट ताकीद करती है कि ^{६६}कर कर करणा लिख ले जाह । आपे बीज आपे ही खाह । नानक हुकमी आवह जाह ।^{७७} करने अथवा बीजने वाला केवल तू स्वयं ही है निश्चित रूप से । दूसरा और कोई नहीं ये दुर्लभ आवश्यक ^{६६}चवन्नी^{७७} अथवा कलम विशेष तेरे अपने स्वयं के ही हाथ विशेष पर प्रत्यक्ष धरी हुई है । जैसा चाहे खर्च कर लेवे अथवा लिख विशेष ले अच्छा अथवा बुरा जैसा तुझे निश्चित पसन्द विशेष आवे । इसका क्या इलाज है कि जीव अपने स्वयं के हाथों ही अपना गला विशेष दबाने में अपने को दुर्लभ श्रेष्ठ विशेष समझे । इसी श्रेष्ठता का ही तो खास दुर्लभ आवश्यक

नतीजा विशेष है कि ये अपने को आज तक इस कैद खाने विशेष का ही दुर्लभ आवश्यक अंग विशेष बनाये बैठा है । उपाय करना छूटने का तो एक तरफ रहा केवल नाचने-कूदने में ही अपनी दुर्लभ आवश्यक निश्चित “हस्ती विशेष” को पूरी तरह से खोता विशेष चला जा रहा है निरन्तर । इसी मूर्खता विशेष का ही तो केवल दुर्लभ आवश्यक नतीजा विशेष है निश्चित रूप से “आवह जाह” यानी के बार-2 जन्मना तथा मरना । “एक जन्म” केवल मनुष्य के जन्म विशेष में भुगतने वाले दुखों अथवा नर्कों विशेषों को तो ब्यान किया नहीं जा सकता, फिर अनन्त जन्मों के निकृष्ट योनियों के दुख-अभाव अथवा घोर भयानक-2 नर्कों विशेषों को ब्यान करने में कौन सी कलम विशेष, कब कभी सुपने में भी समर्थ विशेष होने का दावा विशेष पेश करने में समर्थ विशेष ही हो सकेगी । अर्थात् दुर्लभ आत्मा विशेष को भुगतने वाले अनन्त काल के भयानक-2 तड़पा देने वाले घोर-2 दुखों विशेषों को दुर्लभ बताया ही नहीं जा सकता केवल भुगता विशेष अवश्य जा सकता है । यह कीमती आवश्यक चवन्नी विशेष प्रत्येक काल में केवल दुर्लभ विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक आत्मा विशेष के लिये यकीनी तौर पर निश्चित आवश्यक दुर्लभ “सच” विशेष ! यानी के प्रत्येक आत्मा विशेष को यह दुर्लभ आवश्यक चवन्नी विशेष खर्च विशेष करने के लिये केवल मनुष्य के ही दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होती है निश्चित

रूप से । आत्मा विशेष मन-वचन तथा शरीर द्वारा इस आवश्यक दुर्लभ कीमती चवन्नी विशेष को खर्च विशेष करती है, मनुष्य के आवश्यक जन्म विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कर के यकीनी तौर पर । यह दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष आत्मा को केवल अनन्त काल विशेष के बाद ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है केवल “प्रभु” की ही दुर्लभ आवश्यक “दया” विशेष से प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर । चौरासी लाख योनियों में भरपूर भ्रमण विशेष करने के बाद ही यह दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है यकीनी तौर पर “आत्मा विशेष को ।” आप एक लाख जूनों की गिनती विशेष करने में भी केवल असमर्थ विशेष ही हो प्रत्येक काल में सभी उपलब्धियों विशेषों का प्रयोग विशेष-2 ढंग विशेषों से करते हुए धरती के सभी श्रेष्ठ-2 दुर्लभ-2 महान-2 मनुष्य विशेष-2 मिल कर के भी केवल असमर्थ विशेष ही साबित होंगे फिर अनन्त काल विशेष तथा अनन्त जूनों तथा एक-2 जून विशेष में प्रत्येक आत्मा विशेष अनन्त बार पैदा हुई तथा निरन्तर करती विशेष रही किस के पास सुपने में भी ऐसी समर्था विशेष है आंशिक रूप से भी, जो केवल एक ही आत्मा का केवल सीमित समय विशेष का ही ब्योरा विशेष-2 देने में काबिल विशेष होवे ? फिर प्रत्येक जून विशेष के अनन्त काल के अनन्त भयानक-2 घोर दुख विशेष-2 आवश्यक रूप से भुगतने विशेष के बाद ही केवल एक अवसर विशेष उपलब्ध विशेष हुआ है, दुर्लभ

आत्मा विशेष को मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष का केवल स्वयं को पूरी तरह से इस जेलखाने से मुक्त करवाने के हेतू ही, “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया” विशेष से यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । अब आवश्यक कीमती चवन्नी विशेष दुर्लभ को कैसे तथा किस आवश्यक ढंग विशेष से खर्च विशेष करना है, इसके लिये प्रत्येक आत्मा विशेष को पूर्ण जागृति विशेष आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष की गई है प्रभु की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से । जिस दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष का केवल दुरुपयोग भरपूर विशेष करने में ही आत्मा विशेष स्वयं को “दुर्लभ श्रेष्ठ” विशेष तौर पर स्थापित विशेष करने में ही निरन्तर दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष है । इस आवश्यक दुर्लभ ताकत विशेष का प्रयोग आत्मा विशेष नाचने कूदने इत्यादि रंग-तमाशे विशेष में निरन्तर भरपूर विशेष तौर पर खर्च विशेष कर रही है केवल स्वयं को ही अनन्त काल तक के घोर भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषों को भुगतने विशेष के लिये ही तैयार विशेष कर रही है दुर्लभ आत्मा विशेष आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार यकीनी तौर पर । एक बार यह कीमती दुर्लभ आवश्यक चवन्नी विशेष हाथ से पूरी तरह से निकल विशेष जाने के पश्चात् फिर यह दुर्लभ आवश्यक “मौका” कब उपलब्ध विशेष होगा, इसे कोई नहीं जानता निश्चित रूप से । यह कीमती चवन्नी आवश्यक दुर्लभ “किस ढंग विशेष” से “किस विशेष” पर “खर्च

विशेष” की जा रही है इस पर “भरपूर नजर विशेष” रखी जाती है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । प्रत्येक आवश्यक खर्च विशेष की उपलब्धि विशेष केवल पहले ही पूर्ण निश्चित विशेष है प्रत्येक काल में । अर्थात् आप ने खर्च विशेष करके जो कुछ भी चाहा विशेष है वह अवश्य आवश्यक रूप से उपलब्ध विशेष होगा ही, जिसे पूरा का पूरा केवल आप को ही अनन्त काल विशेष के बाद भी हज्म विशेष करने के लिये अवश्य आवश्यक तौर पर “मंजूर” विशेष होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । इसलिये अभी से हाजमे को बढ़ाने के लिये तीनों समय नियम से नुस्खा विशेष खाना शुरू कर दो, किसी मान्यता प्राप्त वैद्य विशेष से ले कर दूध विशेष के साथ ताकी कुछ बल विशेष भी बढ़े आवश्यक रूप से भुगतने विशेष के लिये क्योंकि चीखों पुकार सुनने वाला कोई भी उपलब्ध विशेष ही नहीं होगा निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो “फिजूल खर्चों” चतुर-विद्वानों-श्रेष्ठों-दुर्लभों-महान-पातशाहों-सदस्यों-विशेषों-2 । लेखा विशेष पहले से ही निश्चित विशेष है, बारह आने के रूप में आवश्यक तौर पर जिसे ले करके प्रत्येक आत्मा विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हुई है दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष में जिसे आंशिक रूप से भी बदलना प्रत्येक काल में केवल पूर्ण निश्चित असंभव विशेष ही है प्रत्येक आत्मा विशेष के लिये यकीनी तौर पर । केवल वही कुछ उपलब्ध विशेष हो रहा है जो तूने पिछले केवल मनुष्य के ही दुर्लभ आवश्यक जन्मों विशेषों में कमाया

विशेष था, उपलब्ध दुर्लभ कीमती आवश्यक चवन्नी विशेष को खर्च विशेष कर के निश्चित रूप से । इस दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष की दुर्लभ आवश्यक कीमती चवन्नी विशेष को तू जहाँ भी जिस भी ढंग विशेष से खर्च विशेष करने में दुर्लभ घोर व्यस्त है इस की उपलब्धियाँ विशेष-2 महान-2 दुर्लभ-2 भी आवश्यक रूप से तुझे अगले जन्मों विशेषों में अवश्य ही उपलब्ध विशेष होंगी आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । यही सब से बड़ा आवश्यक “**भ्रम**” विशेष है, कि सब कुछ तुझे केवल चालाकियों विशेषों से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो रहा है तथा कोई भी तेरी दुर्लभ-2 धिनौनी कारस्तानियों विशेषों को नहीं जानता, अर्थात् सृष्टि केवल पाप विशेष से ही रोशन विशेष है यही सबसे बड़ा आवश्यक धोखा अथवा भ्रम विशेष है “**शैतानी ताकतों**” का प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर । पिछले आवश्यक प्रत्यक्ष उपलब्ध फल विशेष में और फल विशेष जुड़ने की गुंजाइश विशेष ही कहाँ है, जो तुझे अपनी उपलब्धियों विशेषों पर घोर नाज़ विशेष हो रहा है । आगे आवश्यक अवसर विशेष उपलब्ध विशेष होते ही, तुरन्त तुझे सभी भ्रमों विशेषों से आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से पूर्ण मुक्त विशेष कर दिया जायेगा फिर केवल “**खून के आँसू**” बहाना बैठ कर भयानक-2 चीत्कार विशेष-2 करते हुए, अपने व्यर्थ के ही दुर्लभ-2 फिजूल खर्च विशेष को याद विशेष करते हुए यकीनी तौर पर । लेखा पहले है

जन्म विशेष बाद में फिर प्रत्यक्ष विशेष होते ही “मौत” भूत की तरह से आवश्यक रूप से प्रत्येक आत्मा के सिर पर सवार विशेष हो करके निरन्तर हज्म विशेष करने लग जाती है, प्रत्येक आवश्यक दुर्लभ उपलब्धि विशेष को भी यकीनी तौर पर-पूरा का पूरा हज्म विशेष कर जाने तक पीछा विशेष नहीं छोड़ती निश्चित रूप से । प्रत्येक पल दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष का, कीमती दुर्लभ आवश्यक चवन्नी विशेष की, निश्चित दुर्लभ आवश्यक पाई विशेष ही है जिसे खूब सोच-विचार कर खर्च विशेष करना है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से । तेरा क्या धन्धा विशेष है केवल तरह-2 की तालियां विशेष-2 पीट कर नाचना कूदना । जितनी भी कब्रें अथवा पिंजरे दुर्लभ-2 महान-2 विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्धि विशेष हैं, केवल चवन्नी कीमती दुर्लभ विशेष की घौर फिजूल खर्ची विशेष का उत्कृष्ट आवश्यक नमूना विशेष दुर्लभ ही है प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर । अपनी व्यर्थ की खर्चीली आदत विशेष से तू भी इन दुर्लभों विशेषों में ही शामिल किया जा चुका है निश्चित रूप से चलो बढ़िया हो गया, कभी जल विशेष में तैरते फिरो कभी पंख लगा कर बिना टिकट विशेष के हवा में उड़ते फिरो कहीं भी कभी पूँछ फटकारते हिनहिनाते फिरो तरह-2 की बोलियाँ विशेष-2 बोलते हुऐ, केवल स्वयं को ही सर्वश्रेष्ठ महान दुर्लभ-2 विशेष-2 स्थापित विशेष करते हुऐ यकीनी तौर पर । भाई सचमुच तू तो कमाल का छुपा

हुआ रूस्तम विशेष ही निकला, इतनी महान-2 दुर्लभ-2 आवश्यक उपलब्धियाँ विशेष-2 कैसे ब्यान की जायें लफजों विशेषो से ! चलो सारे कुल विशेष के ही भाग विशेष-2 दुर्लभ खुल ही गये निश्चित रूप से, “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से घौर-2 पाकों विशेषो दुर्लभों की, अन्नत काल तक की दुर्लभ आवश्यक सैर विशेष-2 करने के हेतू ही यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । देखियो किसी और को भी कहीं ये घौर फिजूल खर्ची विशेष आवश्यक का नुस्खा दुर्लभ खास मत लिखवा दियो सदा पूर्ण रूप से गुप्त विशेष ही रखियो आवश्यक रूप से कहीं भूले से भी अगर कुछ लीकेज विशेष हो गई, तो सभी दुर्लभ-2 महान-2 कुल सहित वहीं पर लाईन विशेष-2 दुर्लभ में ही खड़े लगे मिलेंगे, दुर्लभ-2 घौर-2 पाकों विशेषो में दुर्लभ आवश्यक कीमती सैर विशेष करने के हेतू ही यकीनी तौर पर । फिर तेरे कुल की श्रेष्ठता भला कैसे स्थापित विशेष हो सकेगी निश्चित रूप से ? तुझे तो पहले से ही दूसरे नम्बर विशेष में आना कतई पसन्द ही नहीं है खानदानी तौर पर यकीनी रूप से । सोच तो सही कैसे इस सदमें खास को तू बर्दाश्त विशेष करने में स्वयं को पूर्ण समर्थ विशेष बना सकेगा निश्चित रूप से ? इसलिये तुरन्त अभी से ही सावधान विशेष हो जा पूर्ण तौर पर, दुर्लभ आवश्यक निश्चित “खामोशी” विशेष अस्त्रियार विशेष करते हुये यकीनी तौर पर ।

“घड़ी चसे का लेखा दीजै बुरा-भला सह जीउ ।”

अर्थात् यानी के प्रत्येक पल अथवा पाई चवन्नी कीमती दुर्लभ विशेष का “लेखा” अर्थात् प्रतिफल रूपी आवश्यक भुगतान विशेष-2 “दीजै” यानी के “भुगतान” विशेष ही पड़ेगा प्रत्येक आत्मा विशेष को, प्रत्यक्ष उपलब्ध मनुष्य के आवश्यक दुर्लभ जन्म विशेष की पूरी आयु रूपी कीमती दुर्लभ आवश्यक चवन्नी विशेष का निश्चित रूप से “बुरा भला” अर्थात् जैसा भी दुर्लभ आवश्यक खर्च विशेष किया है आत्मा विशेष ने, कीमती विशेष की दुर्लभ आवश्यक कीमती चवन्नी की प्रत्येक पाई अच्छा या बुरा “सह जीउ” यानी के पूरा का पूरा अनन्त काल के बाद भी विद इंटेरेस्ट जुर्माना विशेष-2 “जीउ” अर्थात् आत्मा विशेष को “सह” यानी के हजम विशेष करने के लिये अवश्य ही आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से “मजबूर” विशेष-2 होना ही पड़ेगा यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो चतुरों विद्वानों-श्रेष्ठों-महानों-दुर्लभों-पातशाहों-सदस्यों-विशेषों। “इक पल साचा वीसरे सा वेला बिरथा जाई” अर्थात् यदि तेरा प्रत्येक दुर्लभ आवश्यक पाई रूपी पल विशेष का खर्च विशेष, “साचा” यानी के पूर्ण ईमानदारी विशेष से रहित “सच” दुर्लभ विशेष आवश्यक को “वीसरे” यानी के भुला विशेष कर के किया गया है, तो निश्चित रूप से तू जान

ले कि तेरी आवश्यक लागत विशेष भी “विरथा जाई” यानी के व्यर्थ ही चली जायेगी निश्चित रूप से फिर लाभ विशेष की कौन सी कल्पना विशेष धरी जाये यकीनी तौर पर ? “स्वास-स्वास संभालिये आपे बक्श करे रंजाई ।” अर्थात् स्वास-स्वास यानी के दुर्लभ आवश्यक स्वास रूपी प्रत्येक पाई दुर्लभ आवश्यक कीमती चवन्नी विशेष को “संभालिये” अर्थात् “ठीक ढंग” विशेष से “ठीक जगह” दुर्लभ आवश्यक विशेष पर ही केवल खर्च विशेष कर आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से “रंजाई” अर्थात् स्वयं को पूरी ईमानदारी विशेष से दुर्लभ आवश्यक “रजा” विशेष में राजी विशेष रख निरन्तर, यानी के अपनी ही फिजूल खर्ची विशेष का पूरा-2 आवश्यक निश्चित भुगतान विशेष-2 चुका, पूरी आवश्यक वफादारी विशेष के साथ स्वयं को आगे के लिये पूरी तरह से सावधान विशेष रखते हुऐ आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से सभी फालतू के खर्च विशेष से सदा के वास्ते पूरी “तौबा” विशेष करते हुऐ आवश्यक रूप से प्रमाणिक तौर पर “विशेष रूप से” स्वयं को बक्शवाने योग्य साबित विशेष कर प्रभु के दुर्लभ आवश्यक “दरबारे स्वास” में, तभी कोई “आप” यानी के “अकाल पुरख रूपी परमात्मा” दुर्लभ विशेष तुझे भी आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अवश्य ही “बक्श” यानी के पूरी तरह से मुक्त

विशेष ही कर देगा । इन अनन्त काल की घोर-भयानक-2 तड़पा देने वाली कैद विशेष से यकीनी तौर पर ।

“अकाल”-“काल” यानी के घोर अभाव विशेष अर्थात् प्रत्येक उपलब्धि विशेष को निरन्तर पूरी तरह से मिटा देने वाली आवश्यक सत्ता दुर्लभ विशेष जो सब कुछ हज्म विशेष करती चली जा रही है बिना रुके लगातार कुछ भी प्रत्यक्ष उपलब्धि विशेष होते ही यकीनी तौर पर निश्चित आवश्यक ताकत दुर्लभ विशेष “विरोधी पक्ष” विशेष के रूप में तीनों मण्डलों दुर्लभों की पूर्ण आवश्यक अधियाता विशेष अधिकारी विशेष दुर्लभ आवश्यक के रूप में खेल विशेष का आवश्यक दुर्लभ अहम पहलू विशेष यकीनी तौर पर “काल विशेष” में स्याह काली सी सफेद दुर्लभ निश्चित आवश्यक प्रकाश विशेष लिये हुये दुर्लभ आवश्यक आत्मा विशेष निश्चित रूप से “काल” विशेष ही है सर्वत्र प्रत्यक्ष उपलब्धि विशेष जो दुर्लभ आवश्यक कीमती चवन्नी विशेष को खर्च विशेष करवाने के हेतू ही, निरन्तर अनन्त इनायतों दुर्लभों को प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर रहा है आत्मा विशेष के समक्ष “लुभाने के हेतू” ही यकीनी तौर पर प्रत्येक आवश्यक खर्च विशेष की गई दुर्लभ आवश्यक पाई विशेष का पूरा-पूरा निश्चित आवश्यक फल विशेष प्रत्यक्ष उपलब्धि विशेष करवाने वाला आवश्यक “सत्ता” विशेष

अर्थात् वसूली विशेष करने वाला दुर्लभ निश्चित आवश्यक अधिकारी विशेष केवल “दण्ड विशेष” के रूप में प्रत्यक्ष दुर्लभ आवश्यक न्यायाधीश विशेष सुचारु रूप से आवश्यक “मर्यादा” विशेष-2 स्थापित विशेष करने वाला, दुर्लभ-2 अवतारी विशेष-2, आवश्यक रूपों विशेषों में प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष निश्चित रूप से, “प्रत्येक घट विशेष” में पूरी तरह से रमा हुआ दुर्लभ आवश्यक “अंश विशेष” के रूप में लगातार निरन्तर घटने विशेष वाला दुर्लभ आवश्यक काल विशेष ही है निश्चित रूप से ! ऐसे खौफनाक भयानक स्याह काली “टपकते खून” जैसे सुर्ख लाल प्रकाश रूपी विकराल “शैतानी ताकतों” से रहित तथा इन्हें भी प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर निरन्तर धारण विशेष करने वाला, काल विशेष से रहित दुर्लभ आवश्यक “अकाल” विशेष निरन्तर निश्चित प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है यकीनी तौर पर “तात राम नहिं नर भूपाला-भुवनेस्वर कालहु कर काला ।” अर्थात् जड़ चेतन में निरन्तर भरपूर रमी हुई निश्चित प्रत्यक्ष आवश्यक “अजोनी” दुर्लभ “ताकत” विशेष किसी धरती का राजा विशेष कैसे हो सकती है? यानी के अनन्त ब्राह्मण्डों रूपी “भुवनेश्वर” विशेषों को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कर आवश्यक रूप से “धारण” विशेष करने वाली है, दुर्लभ आवश्यक “ताकत रूपी रमईया विशेष” जो सभी “शैतानी ताकतों” रूपी काल विशेष का भी दुर्लभ आवश्यक

निश्चित काल विशेष ही है प्रत्येक काल में अर्थात् जब चाहे सभी शैतानी ताकतों आवश्यक दुर्लभों को अनन्त ब्राह्मण्डों सहित अपने में ही पूरी तरह से समेट विशेष लेवे आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार तथा जब चाहे उन्हें फिर से और नये बेहतर आवश्यक ढंग विशेष से प्रस्तुत विशेष कर देने में निरन्तर पूर्ण आवश्यक दुर्लभ समर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर “अकाल” नाम की दुर्लभ आवश्यक निश्चित “सत्य” रूपी ताकत विशेष । “कहाँ कहाँ लगि नाम बड़ाई-राम न सकहिं नाम गुण गाई ।” अर्थात् मैं क्या बड़ाई विशेष ब्यान करूँ, नाम रूपी दुर्लभ आवश्यक निश्चित प्रकाश विशेष की, जबकि धरती का दुर्लभ आवश्यक श्रेष्ठ राजा राम ही इस “अकाल” रूपी नाम की दुर्लभ आवश्यक निश्चित ताकत रूपी सत्ता विशेष को ब्यान विशेष करने में पूर्ण असमर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से-प्रत्येक काल में पूरी धरती के सभी राम रूपी राजे विशेष-2 दुर्लभ-2 मिल करके भी केवल सुपने में भी-आंशिक रूप से भी व्यक्त विशेष करने में केवल पूर्ण अपंग विशेष ही हैं निश्चित रूप से-यकीनी तौर पर, इस दुर्लभ आवश्यक निरन्तर निश्चित “परम चेतन सत्ता” रूपी आवश्यक दुर्लभ निश्चित “सत्य” विशेष को । “सोभ(संभु) विरंचि बिसनु (विष्णु) भगवाना-उपजहि जासु अंस ते नाना ।” अर्थात् पूरा जगत विशेष जिनब्रह्म-विष्णु-शंकर-संत-गुरु-पातशाह-

हजूर-दाता-महाराज-बाबा-ईसा-मुहम्मद-नानक-गोबिंद वगैरह-2
इत्यादि को “प्रभु” के पिता का भी बाप दुर्लभ विशेष स्थापित
करके पूज विशेष रहा है ऐसे अनन्त दुर्लभ-2 परमात्मा विशेष
केवल “उपजहि” अर्थात् प्रत्यक्ष विशेष किये जाते हैं “जास अंस
ते नाना” यानी के “अकाल” रूपी दुर्लभ आवश्यक आधारभूत
निश्चित ताकत विशेष के एक छोटे से “रस” यानी के जास विशेष
रूपी अंश विशेष से ही अनन्त दुर्लभ-2 भगवान विशेष-2 प्रकट
होते हैं केवल “मकसद” विशेष-2 को आवश्यक रूप से पूर्ण
सफल विशेष बनाने के हेतू ही दोनों दुर्लभ आवश्यक पक्षों विशेषों
के द्वारा अपने-2 आवश्यक पक्ष विशेष को पूर्ण सुदृढ़ विशेष
बनाने के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर प्रत्यक्ष उपलब्ध
विशेष किये जाते हैं “काल तथा अकाल विशेष” रूपी दुर्लभ-2
आवश्यक आत्मा विशेष-2 “पुरुष” अर्थात् सब कुछ प्रत्यक्ष
प्रस्तुत विशेष करके निरन्तर आवश्यक रूप से धारण विशेष करने
वाली आधारभूत दुर्लभ आवश्यक निश्चित “परम चेतन सत्ता”
विशेष ही केवल सभी में श्रेष्ठ विशेष पुरुषोत्तम विशेष कहलाने
की इकलौती आवश्यक दुर्लभ अधिकारी विशेष ही है प्रत्येक काल
में निश्चित रूप से ।

“परमात्मा” अर्थात् “परम+आत्मा” यानी के सभी
आत्माओं में परम अर्थात् श्रेष्ठ यानी के सभी आत्माओं को भी

प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर निरन्तर चेतन विशेष रखने वाला परम चेतन दुर्लभ आवश्यक आत्मा ही “परमात्मा” विशेष है निरन्तर निश्चित-स्थिर-अडोल-अलख-अगम-अगोचर-अनामी-अकाल रूपी दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष एक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष के रूप में जड़ तथा चेतन दोनों को प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर निरन्तर आधारभूत धारण विशेष करने वाला प्रत्येक काल में निरन्तर निश्चित प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष रहने वाला दुर्लभ आवश्यक “सत्य” विशेष “सत्यनाम” ही है जिसे आत्मा विशेष द्वारा पवित्र हृदय विशेष से आवश्यक रूप से केवल पुकारने भर से ही सभी कार्य दुर्लभ असम्भव भी निश्चित रूप से समर्थ विशेष ही बना दिये जाते हैं यकीनी तौर पर आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर “परमात्मा रूपी अकाल पुरख” विशेष के द्वारा । विकासशील विकसित दुर्लभ प्राणी विशेष का क्या कार्य विशेष है ? कि स्त्री सभी आवश्यक कार्य निर्वस्त्र रह कर निर्विघ्न पूर्ण रह कर के निर्विघ्न पूर्ण सम्पन्न विशेष करने में निरन्तर और प्रयत्नशील विशेष है प्रमाणिक तौर पर इसीलिये जन्म से ही ये दुर्लभ आवश्यक निश्चित अभ्यास विशेष-2 करवाया जाता है यानी के पढ़ेगी अथवा खेलेंगी दुर्लभ चट्टी विशेष में ही फिर जो आवश्यक कार्य विशेष बिना चट्टी विशेष के हैं उन्हें किन लफजों विशेषों से कैसे ब्यान

विशेष किया जाये ? क्या किया जाये दुर्लभ “विकास” विशेष के लिये आवश्यक रूप से सर्वत्र निर्वस्त्र विशेष रहना आवश्यक विशेष ही है दुर्लभ आवश्यक “विज्ञान” विशेष के अनुसार यकीनी तौर पर । दुर्लभ नतीजा विशेष सर्वत्र प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से । पुरुष सभी आवश्यक कार्य विशेष कण्ठ में लंगोट रूपी फंदा विशेष बाँध करके ही पूर्ण सम्पन्न विशेष करेगा आवश्यक रूप से ताकी “शैतानी ताकतों” को घसीटने में खूब आसानी विशेष रहे और पल्ले से कुछ भी खर्च विशेष ही न करना पड़े यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । ऐसे भयानक विकास विशेष के चक्कर में शरीर का कुछ भी विकास होना तो एक तरफ रहा, उम्र ही घट कर लाख से सौ बरस भी न रही “मुआवजा” विशेष महान दुर्लभ ऐसा प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हुआ है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से कि इस दुर्लभ महाचक्कर विशेष में पूरी तरह से फँस विशेष कर आत्मा विशेष अज्ञानता के घौर महान भयानक अन्धकार विशेष में ही सदा के लिये पूरी तरह से डूब विशेष गयी है यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । यह दुर्लभ आवश्यक नतीजा विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हुआ है, दुर्लभ आवश्यक कीमती चवन्नी विशेष के पूरी तरह से “दुरुपयोग” विशेष का । एक स्त्री यदि दुर्लभ आवश्यक मर्यादा विशेष में स्वयं को पूरी तरह से निश्चित स्थापित

विशेष रखे, तो एक दुर्लभ तपस्वी ऋषि विशेष का जन्म निश्चित ही है अवश्य आवश्यक रूप से, जिसे आप परमात्मा जैसा ही पूजते हो और यदि एक स्त्री ही नियम मर्यादा दुर्लभ आवश्यक से रहित विशेष हो जाये तो कहीं जाने की क्या जरूरत विशेष है सभी घौर-2 भयानक-2 नर्कों विशेषों दुर्लभों का आवश्यक घर नाम का आधार विशेष “घौर गर्भ” रूपी भयानक निकृष्ट नर्क विशेष तो वह निरन्तर अपने साथ ही लिये फिरती है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर दुर्लभ “कामनी” विशेष । फिर इन महान-2 उपलब्ध होने वाली घौर-2 भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों रूपी आभावों विशेषों के भरपूर लबालब भरे हुए आविष्कारों रूपी महान-2 उपलब्धियों “पाकों” विकराल विशेषों को ब्यान विशेष करने के लिये कुछ भी लफज विशेष ही नहीं बचते, अधूरे विशेष होने के कारण प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ।